Man. 8.80.: यद् द्वयोर् अनयोर् वित्थ कार्ये ऽस्मिन् चेष्टितम् मिथः । तद् ब्रूत; Br. 2.22.: इति धर्मविदो विदुः; Sa. 6.36.: एवम् एतद् यथा वेत्थ; R. Schl. I. 57.5.: इति विद्महे. *Cum accus., subintellecto verbo subst., in constructionibus quae lat. infin. cum acc. respondent* (cf. ज्ञा p. 142.). Mah. 1.8395.: न विद्महे हृतम् मातः श्येनेना "खुम्; Sa. 5.11.: विद्धि मान् त्वं शुभे यमम्. *Cum infin.* R. Schl. II. 12.104.: न वेत्ति रामः परुषाणि भाषितुम्. 4) nosse, notionem habere, dignoscere, cognoscere. N. 6.8.: यो वेद धर्मान् अखिलान्; 19.30.: यान् नलो वेद विद्याम्; 5.13.: कथं हि देवान् जानीयाङ् कथं विद्यान् नलम्; R. Schl. I. 74.14.: सर्वे ना 'वेदिषुर् दिशः. 5) putare, arbitrari. Bh. 2.19.: य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चै 'नम् मन्यते हतम्. *Caus. P. A.* 1) facere ut quis sciat, certiorem facere, nuntiare, indicare. Man. 8.176.: यः साधयन्तञ् छन्देन वेदयेद् धनिकन् नृपे; 12.31.: न ब्राह्मणो वेदयेत किञ्चिद् राजनि. 2) *A.* वेदये percipio, sentio (facio ut sciam). Man. 12.13.: येन वेदयते सर्वं सुखन् दुःखञ्च; R. Schl. II. 64.67.: वेदये नच संयुक्तान् शब्दस्पर्शरसान् अहम्. (Lat. *video*, gr. ϝΙΔ, εἴδον, εἴδομαι; οἶδα = वेद scio; boruss. vet. *waidimai* scimus, *waiditi* scitis, scite, *widdai* vidit; lith. *wéizdmi* video = वेद्मि; *wéida-s* facies; slav. *vjemj* scio (pro *vjedmj*), *vjedjatj* sciunt = विदन्ति (v. gr. comp. 436.), *vid-je-ti* videre; goth. *vait* scio, scit = वेद id., gr. οἶδα, οἶδε, v. gr. comp. 491.; *wita* observo, praet. *wit-ai-da* = Caus. vel cl. 10. वेदयामि, omisso gunae incremento, v. gr. comp. 109. 6.; hib. *fêth* «science, knowledge, instruction»; cambro-brit. *gwyz* id. (v. Pictet p. 59.); fortasse *feidhim* «I manifest, relate» = Caus. वेदयामि, nisi pertinet ad वद् q. v.; *feidir* «power, hability»; fortasse *aithnim* «I know», *aithnighim* id.; *aithne* «known», subst. f. «knowledge, acquaintance», abjectâ cons. initiali sicut in *athair* pater, v. पितृ; fortasse *fios* «knowledge, art, science, understanding, vision, message», mutato *d* vel *t* in *s*, *fiosach* «knowing, expert».

c. आ *Caus.* certiorem facere, nuntiare. N. 17.45.

c. आ praef. सम् *Caus. id.* Mah. 2.14.

c. नि *Caus.* id. *c. acc. vel gen. vel dat. pers.* Su. 3.8. Sa. 3.7. In. 5.17. N. 3.5.

c. नि praef. वि *Caus.* id. R. Schl. I. 1.72.

c. नि praef. सम् *Caus.* id. Mah. 1.3224.

c. प्रति *Caus.* id. N. 21.1.25.5.

c. प्रति praef. सम् *Caus.* id. Mah. 1.3627.

2. विद् 6. *P. A.* विन्दामि, विन्दे (gr. 335.), *Part. pass.* विदित, वित्त, विन्न. Invenire, adipisci. N. 3.4.: न शय्यासनभोगेषु रतिं विन्दति; 6.6.: देवानाम् मानुषम् मध्ये यत् सा पतिम् अविन्दत; 10.12.: विन्देता 'पि सुखङ् क्वचित्. In matrimonium accipere. Man. 9.69.: ताम् अनेन विधानेन निजो विन्देत देवरः (schol. परिणयेत्); Mah. 1.7192. — *Pass.* inveniri, esse, existere, exstare. (secundum grammaticos विद् cl. 4. *A.* सत्तायाम् *K.* भावे *V.*) Br. 2.2.: न हि सन्तापकालो ऽयम् वैद्यस्य तव विद्यते; N. 9.29.: नच भार्यासमङ् किञ्चिद् विद्यते; 13.40. 26.5. Dr. 7.17. Bh. 3.17. — विदित impetratus, possessus. Dr. 4.12. वित्त *n.* divitiae. N. 26.4. Bh. 10.23.

c. अधि vivente uxore aliam ducere uxorem. Man. 9.80.: मद्यपा ... व्याधिता वा 'धिवेत्तव्या (schol. तस्यां सत्याम् अन्यो विवाहः कार्यः). अधिविन्ना femina, cujus maritus aliam duxit uxorem, Wils. «a superseded wife».

c. अनु 1) invenire, adipisci. Rigv. 6.5.: अविन्द उस्रिया अनु «reperisti vaccas». In matrimonium accipere. Mah. 1.5114.: शारद्वतीन् ततो भार्याङ् कृपीन् द्रोणो ऽन्वविन्दत. 2) existimare, putare. Gitagov. 4.2.: इन्दुकिरणम् अनुविन्दति खेदम् अधीरम्.

c. अभि invenire, adipisci. Mah. 3.1933.

c. आ *Caus.* tradere. Sa. 3.6.: तस्या 'र्घम् आसनञ्चै 'व गाञ्चा "वेद्य.

c. नि *Caus.* id. Sa. 1.27.: शेषाः पूर्वन् निवेद्यच; Man. 11.116.: सर्वस्वं वेदविद्भ्यो निवेदयेत्.

c. परि 1) nubere viro, cujus frater major non maritus est.